गाय भैसों में कृत्रिम गर्भाधान : सफलता की कुँजी

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ. प्र.)

- विश्व भर में कृत्रिम गर्भाधान गाय–भैंसों के प्रजनन हेतु सर्वाधिक अपनायी जाने वाली तकनीक है। इस तकनीक में उत्तम नर से वीर्य कृत्रिम विधि से एकत्रित कर गर्मी में आई मादा के जननांगों में पूर्ण स्वच्छता के साथ उपकरण द्वारा पहुँचाया जाता है।

- कृत्रिम गर्भाधान न केवल पशुओं के प्रजनन की एक विधि है अपितु यह आनुवांशिक सुधार हेतु एक प्रभावशाली माध्यम भी है अर्थात प्राकृतिक संसर्ग की अपेक्षा इस तकनीक द्वारा वृहद पशु आबादी का नस्ल सुधार तीव्रता से संभव है।

- गाय अथवा भैंस सामान्यतः लगभग 21 दिन पर गर्मी पर आती है तथा खड़ी गर्मी की अवधि गाय में लगभग 18 घंटे व भैंस में कुछ अधिक होती है। अधिकतर गर्मी रात्रिकाल में प्रकट होती है।

- बेचैनी तथा पशु का अन्य पशुओं से अलग होकर चलना, रम्भाना, योनि द्वार पर लाली व सूजन, दुग्ध उत्पादन तथा आहार में कमी, योनि से स्वच्छ पारदर्शी स्राव, गाय का दूसरी गायों पर चढ़ना आदि गर्मी के प्रमुख लक्षण हैं।

- खड़ी गर्मी अर्थात दूसरे पशु के चढ़ते समय गर्मी वाले पशु का शांत खड़े रहना कृत्रिम गर्भाधान हेतु श्रेष्ठ समय माना जाता है।

- भैसों में दूसरे पशु पर चढ़ने रम्भाने व स्त्राव की प्रवृत्ति गाय की अपेक्षा कम पाई जाती है। अतः खड़ी गर्मी की जांच हेतु भैंसों में सांड का प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

- प्रायः गर्मी के सभी लक्षण एक ही पशु में नहीं मिलते, कुछ लक्षण कमजोर अथवा अनुपस्थित भी हो सकते हैं। सामान्यतः यदि पशु प्रातः गर्मी में आया है, तो सायं व यदि सायं गर्मी में आया है तो अगली प्रातः गर्भाधान कराना गर्भधारण हेतु श्रेष्ठ है।

- गर्मी की उचित जांच ,कृत्रिम गर्भाधान का उचित समय, वीर्य की उत्तम गुणवत्ता एवं सही विधि से किया गया गर्भाधान तकनीक की सफलता हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है।

- यदि उपरोक्त सभी कारकों के साथ नियमित पर्याप्त एवं संतुलित आहार जिसमें हरा चारा भी सम्मिलित हो सुनिश्चित किया जा सके तो कृत्रिम गर्भाधान के सफल होने की संभावना प्रबल होती है।

- कभी–कभी पहले से गाभिन पशु भी गर्मी के लक्षण प्रदर्शित करता है। अतः पशुचिकित्सक से गुदा परीक्षण जांच द्वारा यह सुनिश्चित करना अत्यन्त आवश्यक है कि पशु गाभिन तो नही है क्योंकि ऐसे पशु का कृत्रिम गर्भाधान, गर्भपात का कारण बन सकता है।

- कृत्रिम गर्भाधान किये गये पशु का अगली गर्मी पर न आने पर गर्भ जांच हेतु 60 दिन के उपरान्त पशुचिकित्सक द्वारा गुदा परीक्षण करवा लेना चाहिये ताकि पशु के गाभिन होने का प्रमाण मिल सके। गाभिन न पाये जाने पर गर्मी की दोष पूर्ण जांच कारण हो सकती है अथवा पशु को उपचार की अवश्यकता हो सकती है।

- उत्तमनस्ल के सांड के अधिकतम उपयोग व वीर्य के दीर्घकालिक संरक्षण हेतु समूचेविश्व में तरल के स्थान पर हिमीकृत वीर्य को अपनाया गया है। तरल नत्रजन गैस, जिसका तापमान–196 डिग्री सेल्सियस होता है, वीर्य को हिमीकृत अवस्था में वर्षों तक सरंक्षित रखती है, जिससे उत्तम सांड़ की मृत्यु के उपरांत भी उसके वीर्य से बच्चे प्राप्त कियेजा सकते हैं।

- पशुपालक भाइयों को कृत्रिम गर्भाधान तकनीक के बारे में कोई भी भ्रान्ति नहीं पालनी चाहिये क्योंकि यह एक पूर्णरूप से सफल, सुरक्षित एवं प्रचलित तकनीक है, जिसे दुनिया के सभी देशों ने पशु नस्ल सुधार के माध्यम के रूप मे अपनाया है। अतः प्रत्येक पशुपालक को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने हेतु इसे अपनाना चाहिये।

संरक्षण : **डा0 राज कुमार सिंह**
निदेशक, भ0कृ0अ0प0–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122(उ0प्र0)

मार्गदर्शन: **डा0 महेश चन्द्र**
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

लेखक : **डा0 संजीव मेहरोत्रा**
प्रधान वैज्ञानिक रेफरल वेटनेरी पॉलीक्लीनिक

संपादन : **डा0 रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क :
आई0वी0आर0आई0 हेल्पलाइन, 0581–2311111
किसान कॉलसेन्टरः 1800–180–1551
आई0 वी0 आर0 आई0 बेवसाइट : www.ivri.nic.in